आर.एन.आई.नं. RAJBIL/2010/52404

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम् ।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्य्, वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।

सेवा सौभाग्य

पू. कैलाश जी 'मानव'

मूल्य ▶ 5 वर्ष ▶ 15 अंक ▶ 172 मुद्रण तारीख ▶ 1 अप्रैल, 2026 कुल पृष्ठ ▶ 28

मंगल ध्वनि एवं अग्नि साक्षी में 51 युगलों का परिणय उत्सव

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Nar Seva Narayan Seva

Serving Humanity Since 1985

नर सेवा नारायण सेवा

अक्षय तृतीया

एक दिन का मीठा भोजन,
जीवन भर का अक्षय पुण्य।

निर्धन असहाय एवं दिव्यांग बच्चों को मीठा भोजन कराईये

100 बच्चों का भोजन	₹3,000	5000 बच्चों का भोजन	₹1,50,000
500 बच्चों का भोजन	₹15,000	10000 बच्चों का भोजन	₹3,00,000
1000 बच्चों का भोजन	₹30,000	15000 बच्चों का भोजन	₹4,50,000

अभी दान करें »

AI Image

सेवा सौभाग्य

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸15
अंक ▸172 कुल पृष्ठ ▸28

मुद्रण तारीख ▸1 अप्रैल, 2026

सम्पादक मंडल

मार्ग दर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल
सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी
भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

सम्पर्क (कार्यालय)

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva
Sewa Parmo Dharm
MAKE GIVING YOUR HABIT

483, 'सेवाधाम' सेवा नगर
हिरण मगरी, सेक्टर-4,
उदयपुर (राज.) 313002, भारत
फोन नं. +91-294-6622222
वाट्सऐप: +91-7023509999

Web : www.narayanseva.org
Email : info@narayanseva.org

Seva Soubhagya Print Date 1 April, 2026 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-28 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-

CONTENTS

इस माह में

दिव्यांग एवं निर्धन विवाह समारोह

पीड़ा पर प्रेम की जीत

आत्मनिर्भर बने नरेश

कृत्रिम अंग से सक्रिय हुई ज़िन्दगियां

सेवा महातीर्थ में चमके 'नन्हे सितारे'

प्राकृतिक चिकित्सा से मिली राहत

परमार्थ से ही आत्म कल्याण

– सेवक प्रशांत भैया

हम में से हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में समाज का ऋणी है। समाज से ही हमने पोषण पाया है और अपने व्यक्तित्व का निर्माण किया है। तो क्या यह हमारा कर्तव्य नहीं कि उस ऋण की भरपाई के लिए भी हम प्रयत्नशील रहें? श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास जी महाराज द्वारा उल्लेखित पंक्तियाँ "परहित सरिस धर्म नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।" भी उसी ओर संकेत करती हैं, जिसकी इस आलेख में मैं चर्चा कर रहा हूँ।

मनुष्य के व्यक्तित्व और कृतित्व का आंकलन उसके परोपकारी कार्यों के आधार पर होता है, न कि व्यक्तिगत संपदा और समृद्धि के अर्जन पर। जो मनुष्य दूसरों की पीड़ा के निवारण में जितना सहायक होता है, वह उतना ही सभ्य, सुशील, सुसंस्कृत एवं सुलझे विचारों वाला माना जाता है। यह बात अलग है कि कुछ व्यक्ति निजी स्वार्थ के दलदल से बाहर निकलकर जीवन की सार्थकता को सुनिश्चित करना ही नहीं चाहते।

एक धनी व्यक्ति ने अपनी संपदा का निर्धारण करवाया। पता चला कि वह इतना समृद्ध है कि आने वाली 3–4 पीढ़ियाँ भी यदि श्रम न करें, तो भी विलासिता पूर्वक जीवन यापन कर सकती हैं, लेकिन यह जानकर वह व्यक्ति दुःखी हो गया और सोचने लगा कि उसकी पाँचवीं पीढ़ी का क्या होगा। वह चिंता में पड़ गया। अब वह पहले से ज्यादा श्रम करने लगा। रात–दिन चिंता में रहने के कारण उसने भूख–प्यास को भी नजरअंदाज किया। उसकी पत्नी उसकी इस हालत से दुखी हो गई।

पति ने अपने दुःख के बारे में उसे कुछ बताया भी नहीं था। कुछ दिन बाद कस्बे में एक साधु आए। पत्नी पति को उनके पास लेकर गई। साधु ने व्यक्ति से अकेले में बात की और कहा कि तुम्हारी समस्या का हल बहुत आसान है। इसी कस्बे के अंतिम छोर पर एक वृद्धा रहती है। वे कुछ कर पाने में समर्थ नहीं हैं और उनके परिवार में कोई कमाने वाला सदस्य भी नहीं है। तुम उनके पास जाओ और मात्र आधा सेर आटा दे आओ। व्यक्ति घर लौटा और आधा सेर आटा लेकर वृद्धा के पास पहुँचा। वृद्धा ने आटा लेने से यह कहकर इनकार कर दिया कि आज के लिए उसके पास पर्याप्त आटा है। व्यक्ति ने कहा "इसे कल के लिए रख लो।" इस पर वह बोली "जिसने आज का इंतजाम किया है, वह कल भी जरूरत पूरी कर देगा। फिर कल की चिंता में संग्रह क्यों करूँ?" यह सुनकर व्यक्ति की आँखें खुल गईं। उसे अपनी चिंता का समाधान मिल गया। उसने उसी दिन से परोपकार का संकल्प लिया और दीन–दुखियों की सेवा में अपनी कमाई का एक हिस्सा लगाना शुरू कर दिया। लोगों की खुशी देखकर वह स्वयं भी खुश रहने लगा। उसने भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान को सुधारने पर ध्यान केंद्रित किया।

दरअसल, किसी प्राणी को संकट से उबारने, दीन–दुखियों की सेवा करने, भूखे को भोजन और प्यासे को पानी देने जैसे परमार्थ कार्यों से मनुष्य को आंतरिक प्रसन्नता मिलती है। अंतःकरण की चिंताएँ समाप्त होकर उसे शांति और संतोष प्राप्त होता है। सेवा, संवेदना, समर्पण, सहृदयता और स्नेह ये सभी परमार्थ के अंग हैं। इनके अनुसार जीवन को ढालने से असीम संतोष और तृप्ति का अनुभव होता है। दूसरों का भला सोचना आत्मा का स्वभाव है। यही ईश्वर की भक्ति और साधना का वास्तविक अर्थ भी है प्राणिमात्र के प्रति प्रेम और करुणा की अभिव्यक्ति। यदि हमें मानव जीवन के इस दुर्लभ अवसर को सार्थक बनाना है, तो गरीबों, निराश्रितों और पीड़ितों की सेवा में यथाशक्ति अपना योगदान देना चाहिए। प्रेम के दो बोल से भी किसी दुखी की आत्मा पर सांत्वना का मरहम लगाया जा सकता है।

जय नारायण!

अनुभव की पाठशाला हैं बुजुर्ग

पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव'

गांव के एक गरीब लड़के को बचपन से ही काफी परेशानियां झेलनी पड़ीं। माता–पिता थे नहीं। लोगों के घर–खेत पर काम कर जीवन निर्वाह कर रहा था। जब वह किशोर वय हुआ तो उसे लगा कि उसकी जिंदगी बहुत कठिन और मुश्किलों से भरी है। वह हर समय समस्याओं के बारे में सोचता, समाधान को लेकर नहीं। अब तो उसका काम–धाम भी छूट गया। एक दिन जब वह जीवन की इसी उधेड़बुन में खोया था। उधर से एक बुजुर्ग गुजरे। उसने उन्हें अपनी दुविधा बताई। बुजुर्ग ने कहा– 'इन परेशानियों का हल तो बहुत आसान है, तुम इतने बोझ तले क्यों दबे हो? मेरे साथ नदी पार चलो तो मैं उपाय बताऊंगा।' दोनों चलते हुए नदी के किनारे तक आए। बुजुर्ग ने कहा बैठो। जब वहां बैठे–बैठे काफी देर हो गई तो लड़के ने कहा– 'श्रीमान! हमें तो नदी पार करनी है, लेकिन काफी देर से हम यहां बैठे हैं।' इस पर बुजुर्ग बोले– 'नदी सूखने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।' लड़का उनकी इस बात पर हैरान था, उसने उनसे पूछा– 'नदी का पानी कैसे सूख सकता है, उसका बहाव भी वेग पर है। आप कैसी बातें कर रहे हैं।' तब बुजुर्ग ने लड़के को समझाया कि जैसे नदी को पार करने के लिए प्रयास करने अथवा साधन जुटाने पड़ते हैं, उसी तरह जीवन में भी समस्याओं से पार पाने के लिए खुद कोशिश करनी होती है। उन्होंने लड़के से अपने जीवन की अनेक मुश्किलों और उनके निराकरण का जिक्र करते हुए कहा कि आज मैं पूरी तरह 'खुश और संतुष्ट' हूँ।

बंधुओं! बुजुर्ग अनुभव की पाठशाला और ज्ञान का कोष होते हैं। इसलिए समय–समय पर उनसे संवाद और सामंजस्य होना ही चाहिए। दिन में कोई भी समय उनके साथ बिताना सुनिश्चित करें। उनसे अपनी समस्याएँ साझा करें। उनके अनुभव आपको जिंदगी की उस राह पर ले जाएंगे, जहाँ समस्याओं का समाधान है। मनुष्य को यह बात स्वीकार करनी चाहिए कि अपनी समस्याओं और जिम्मेदारियों के लिए वह खुद भी उत्तरदायी है। कठिनाइयों का सामना करना ही बेहतर जीवन की कुंजी है। इसमें सबसे ज्यादा सहायक होता है सकारात्मक दृष्टिकोण। ठीक उसी तरह जैसे बुजुर्ग व्यक्ति ने उस लड़के को बताया कि समस्याओं का अंबार बढ़ाने से जिंदगी मुश्किलों से भर जाती है, जबकि उनका सामना कर हल निकालने से वह बहुत हल्की–फुल्की और खुशनुमा बन जाती है। जिन लोगों की सोच सकारात्मक होती है, उनकी जीवन शैली भी सदा व्यवस्थित रहती है। वे दीर्घायु होते हैं। इस तरह की सोच से शरीर में रोग प्रतिरोधक प्रणाली भी मजबूत होती है। नकारात्मक सोच शरीर के ऊतकों को शिथिल करती है, जबकि सकारात्मक सोच इम्युनिटी को मजबूत करती है।

45वें दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक

हल्दी की खुशबू में 51 दिव्यांगों के चेहरे दमके

दिव्यांगजन सशक्तिकरण और सामाजिक समरसता के क्षेत्र में आपकी अपनी संस्था नारायण सेवा संस्थान द्वारा सेवा महातीर्थ में दो दिवसीय 45वां दिव्यांग एवं निर्धन निःशुल्क सामूहिक विवाह समारोह 15 मार्च को राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक एकता, समान अवसर और मानवीय संवेदना के सशक्त संदेश के साथ सम्पन्न हुआ।

जिसमें देश के विभिन्न राज्यों के 51 दिव्यांग एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के जोड़ों ने वैदिक मंत्रोच्चारण और पवित्र अग्नि की साक्षी में सात फेरे लेकर दाम्पत्य जीवन में प्रवेश किया।

इन जोड़ों में विभिन्न प्रकार की दिव्यांगता से जूझ रहे युवक–युवतियां शामिल थे। कोई पैरों से दिव्यांग, कोई एक हाथ या एक पैर से, कोई दृष्टिबाधित तो कुछ सहारे के साथ चलने वाले। जीवन की जटिलताओं से गुजरने वाले ये जोड़े अब एक–दूसरे की शक्ति बनकर सुखद भविष्य की इबारत लिखेंगे। अधिकांश जोड़ों ने संस्थान में ही

विवाह समारोह का भव्य आयोजन

निःशुल्क सुधारात्मक सर्जरी, कृत्रिम अंग, कैलिपर्स और पुनर्वास सेवाएं प्राप्त कीं। साथ ही सिलाई, मोबाइल रिपेयरिंग, कंप्यूटर और अन्य कौशल प्रशिक्षण के माध्यम से आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाए। जीवनसाथी की तलाश भी संस्थान के माध्यम से ही पूर्ण हुई। इन जोड़ों में 25 दिव्यांग तथा 26 आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से थे।

गणपति वंदन – प्रथम दिन 14 मार्च को विवाह समारोह प्रातः शुभ मुहूर्त में गणपति स्थापना और गणपति वंदन नृत्य "घर में पधारो गजानंद जी" के साथ हुआ। इसके बाद हल्दी और मेहंदी की पारंपरिक रस्में हुई। सभी 51 जोड़े पीले परिधान में पीले फूलों से सुसज्जित हाड़ा सभागार के वासंतिक परिवेश वाले मंच पर अपने निर्धारित स्थानों पर आसीन हुए। संस्थान के संस्थापक–चेयरमैन पूज्य गुरुदेव कैलाश जी 'मानव', सहसंस्थापिका श्रीमती कमला देवीजी, अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी, निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल और सुश्री पलक जी अग्रवाल ने विशिष्ट अतिथियों सर्वश्री विजया कुमारी जी दिल्ली, त्रिशाल जी शर्मा डरबन (द.अफ्रीका), महीराज जी मॉरीशस, प्रसन्न कुमार राउत जी उड़ीसा के साथ गणपति

स्थापना कर विवाह समारोह का विधिवत शुभारंभ किया।

हल्दी-मेहंदी - अतिथियों ने जोड़ों को हल्दी और उसके बाद मेहंदी लगाने की रस्म निभाई। इस दौरान "आए हैं मेरी जिंदगी में बहार..., हल्दी लगाओ तेल चढ़ाओ री..., म्हारी मेहंदी को रंग..., श्याम नाम की मेहंदी..." जैसे गीतों पर जब अतिथियों ने ठुमके लगाए तो पूरा माहौल उत्सवमय हो उठा।

हर जोड़ा एक कहानी, एक प्रेरणा - सामूहिक विवाह का हर जोड़ा अपने आप में संघर्ष, साहस और उम्मीद की एक मार्मिक कहानी था।

किसी ने शारीरिक चुनौतियों के बावजूद जीवन से हार नहीं मानी, तो किसी ने सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयों के बीच भी अपने सपनों को

जीवित रखा। ये कहानियां संदेश देती हैं कि हौसले की उड़ान ही इंसान की असली पहचान होती है। यही कारण है कि यह सामूहिक विवाह समारोह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि मानवता, आत्मविश्वास और नए जीवन का उत्सव बन गया।

तोरण रस्म – दूसरे दिन 15 मार्च की प्रातः पारंपरिक वाद्ययंत्रों और मंगल ध्वनियों के बीच सभी 51 जोड़ों ने देशभर से पधारे करीब 800 अतिथियों, सहयोगियों और परिजनों की गरिमामयी उपस्थिति में भगवान श्रीनाथ जी की पावन छवि के सानिध्य में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ तोरण की परम्परागत रस्म का निर्वाह किया।

पुष्प वर्षा और आशीषों का छत्र – दोपहर 12:15 बजे पुष्पों सुसज्जित मंच पर संस्थान

संस्थापक–चेयरमैन पूज्यश्री कैलाश जी 'मानव' और श्रीमती कमला देवी जी से सभी जोड़ों ने आशीर्वाद प्राप्त किया। संस्थान अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया, निदेशक श्रीमती वंदना जी और सुश्री पलक जी की उपस्थिति में वर–वधू ने एक–दूसरे को वरमाला पहनाकर परस्पर जीवनसाथी बनने की स्वीकृति दी। गुलाब की पंखुड़ियों की वर्षा से वातावरण उल्लास और आनंद से भर उठा।

भक्ति और श्रद्धा का संगम– इस दौरान कृष्ण के पंच स्वरूप द्वारकाधीश, सांवरिया सेठ, खाटू श्याम, विठ्ठलेश और श्रीनाथ जी की मनमोहक छवियों के प्राकट्य से वातावरण भक्तिमय हो उठा। इसके पश्चात गणेश जी– रिद्धि–सिद्धि, कृष्ण–रुक्मिणी, शंकर–पार्वती, राम–जानकी तथा विष्णु–लक्ष्मी जी के स्वरूपों के सानिध्य में वरमाला की रस्म सम्पन्न हुई।

सात फेरों में सात वचन – 51 वेदियों पर 51 आचार्यों ने एक मुख्य आचार्य के मार्गदर्शन में वैदिक रीति से पवित्र अग्नि के

सात फेरे सम्पन्न कराए। समारोह में पूर्व वर्षों में विवाह बंधन में बंधे सफल और आत्मनिर्भर दिव्यांग दंपति भी उपस्थित रहे।

उपहारों की सौगात – प्रत्येक जोड़े को नई गृहस्थी प्रारंभ करने हेतु पलंग, बिस्तर, अलमीरा, बर्तन, गैस चूल्हा, डिनर सेट, पंखा, दीवार घड़ी सहित आवश्यक सामग्री प्रदान की गई। कन्यादानियों और अतिथियों द्वारा मंगलसूत्र, चूड़ियाँ, चैन, कर्णफूल, बिछिया, बाली, पायल, अंगूठी और सौंदर्य प्रसाधन सामग्री भी भेंट की गई।

विदाई पर भावनाओं से भीगा माहौल – समारोह में शिव–पार्वती जी और कृष्ण–रुक्मिणी जी के विवाह पर आधारित नृत्य–नाटिकाओं ने सांस्कृतिक गरिमा को नई ऊंचाई दी। विवाह उपरांत नववधुओं की प्रतीकात्मक डोली विदाई ने वातावरण को भावुक बना दिया। नवदंपतियों को उनके गृह नगरों तक पहुँचाने की व्यवस्था संस्थान ने की । इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्रीमती दर्शना जी मेहता, यश जी मेहता,

ओम प्रकाश जी सोनी, नितिन जी व श्रीमती चारुजी मित्तल सहित अनेक सामाजिक कार्यकर्ता, दानदाता और अतिथि उपस्थित रहे।

इस विवाह सहित संस्थान में अब तक 2561 दिव्यांग एवं निर्धन युवक–युवतियों का पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न हो चुका है।

पीड़ा पर प्रेम की जीत

शांतिलाल और सीमा

राजस्थान के प्रतापगढ़ जिले के डोडियार खेड़ा गाँव निवासी नंदलाल– लाली बाई मीणा के पुत्र शांतिलाल के पांव बचपन से ही पोलियो प्रभावित हैं। दोनों पैरों में विकृति के कारण जीवन की राह उनके लिए आसान नहीं रही। लेकिन चुनौतियों के बीच भी उन्होंने हिम्मत के साथ मंजिल खोजने के प्रयत्न जारी रखे। उन्होंने बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त की और आज अपने गाँव में ई–मित्र की दुकान संचालित कर आत्मनिर्भर जीवन जी रहे हैं।

जब भी विवाह की बात आती, उनकी दिव्यांगता एक बड़ी बाधा बन जाती थी। समाज की संकीर्ण सोच कई बार उनके सपनों के आड़े आई, पर उन्होंने विश्वास नहीं खोया।

इसी बीच उनके जीवन में नई उम्मीद बनकर आईं इसी जिले के देवगढ़ गांव के अंबालाल – सुगना मीणा की पुत्री सीमा। सीमा एक साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से हैं, लेकिन उनके विचार बेहद रचनात्मक और सशक्त हैं। वे कहती हैं–

"मैंने शांति जी को देखा है। दिव्यांगता के बावजूद वे मेहनती, पढ़े–लिखे और अपने व्यवसाय में सक्षम हैं। यही मेरे लिए पर्याप्त है।" अभावों में पली–बढ़ी सीमा ने जीवन को धैर्य, संस्कार और सकारात्मक सोच के साथ संजोया है। अब दोनों एक डोर में बंध कर नए जीवन की शुरूआत कर चुके हैं।

कह न सकी, सुन न सकी,फिर भी सब समझ गई :

राजेश की जिंदगी बनी राजकुमारी

मध्यप्रदेश के मुरैना निवासी राजेश जन्म से ही दोनों पैरों से दिव्यांग हैं। वे जमीन पर घिसटकर जरूर चलते हैं, लेकिन अपने सपनों को उन्होंने कभी जमीन पर गिरने नहीं दिया। सीमित शारीरिक क्षमता के बावजूद उनका आत्मविश्वास असीम है। अपनी ई–मित्र की छोटी–सी दुकान खोलकर वे आत्मनिर्भर बने और परिवार का सहारा भी।

फिर भी जब – जब भी बात उनके विवाह की आई, तो दिव्यांगता दीवार बनकर बाधक बनी। लोग उनकी कमी तो देखते लेकिन हिम्मत नहीं। पिता प्रीतम और माँ चरण देवी चिंतित थे, लेकिन ईश्वर ने उनकी करुण पुकार सुन ली।

भिंड जिले के गोहद क्षेत्र के बरौना गाँव की राजकुमारी उर्फ 'छोटी' भी शारीरिक अक्षमता की ऐसी ही चुनौतियों से जूझ रही थीं। वे जन्मजात मूक–बधिर हैं। कमजोर आर्थिक स्थिति और दिव्यांगता के कारण उनका भी रिश्ता कहीं तय नहीं हो पा रहा था। समाज की उन पर दया और सवालों की नजर थी किन्तु समाधान की ललक नहीं। लेकिन नियति ने उनके लिए कुछ तय कर रखा था। इन दो अधूरी कहानियों को उसने पूरा करने का मार्ग प्रशस्त किया अब राजेश व छोटी एक–दूसरे की ताकत बनें।

संस्थान द्वारा आयोजित 45वें दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह में दोनों पवित्र परिणय सूत्र में बंधे। यह विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि भरोसे, साहस और सच्चे साथ की मिसाल है। जहाँ शब्द नहीं एहसास होगा और कदम साथ नहीं चल पाएँगे पर दिल दोनों का समान रूप से धड़केगा।

मधु–संतोष के कदम नहीं, संकल्प साथ चलेंगे– दो संघर्ष, एक संसार

उदयपुर के शास्त्री नगर– खेमपुरा निवासी मधु भोई बाएँ पैर से दिव्यांग हैं, लेकिन हौसले पूरी तरह मजबूत । वे शहर में संचालित एक ब्यूटी पार्लर पर कार्य कर आत्मनिर्भर जीवन यापन कर रही हैं। परिवार में माता प्रेम बाई, भाई और चार बहन हैं। पिता कन्हैया लाल जी का देहांत हो चुका है। सीमित संसाधनों और आर्थिक अभाव के बावजूद मधु ने कभी हार नहीं मानी और संघर्षरत परिवार का संबल बनी रहीं।

वहीं मध्यप्रदेश के इंदौर जिले के नौलाना ग्राम निवासी संतोष कुमार लोढ़ा भी जीवन की चुनौतियों से जूझते हुए आगे बढ़े हैं। जन्म के छह माह बाद उन्हें पैरालिसिस हो गया। पिता रमेश चंद्र और माता भागू बाई ने विपरीत परिस्थितियों में भी उन्हें शिक्षा से जोड़े रखा। आज वे एक स्कूल में शिक्षक हैं और सम्मानजनक जीवन जी रहे हैं।

हालाँकि, दिव्यांगता और आर्थिक स्थिति के कारण उनका विवाह नहीं हो पा रहा था। रिश्ते आते भी थे, लेकिन अक्सर लोग देखकर मना कर देते थे।

इसी बीच संतोष की मुलाकात एक कार्यक्रम के दौरान मधु से हुई। दोनों ने एक–दूसरे की परिस्थितियों को समझा, सम्मान दिया। दोनों में मोबाइल से प्रायः बातचीत होने लगी जिसने शनैः शनैः प्रागढ़ मैत्री का मार्ग प्रशस्त किया और अन्ततः दोनों ने जीवन साथ बिताने का निर्णय लिया। संस्थान के सहयोग से सामूहिक विवाह समारोह में दोनों परिणय सूत्र में बंधे हैं।

यह विवाह केवल मिलन नहीं, बल्कि संघर्ष, आत्मनिर्भरता और सच्चे साथ की सुंदर मिसाल है। जो बताती है कि जब इरादे मजबूत हों, तो परिस्थितियाँ रास्ता नहीं रोक सकतीं।

501 दिव्यांग कन्याओं का पूजन

दुर्गाष्टमी एवं रामनवमी के पावन अवसर पर 26 मार्च को संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की विधिवत पूजा–अर्चना के साथ 501 दिव्यांग कन्याओं का श्रद्धा एवं सम्मान से पूजन किया गया।

निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने पूजन कर कन्याओं को ससम्मान उपहार अर्पित किए तथा हलवा, पूरी, खीर एवं चने का प्रसाद भेंट किया।

उन्होंने कहा कि दुर्गाष्टमी पर कन्या पूजन सेवा, आस्था और सम्मान का प्रतीक है। संस्थान दिव्यांग कन्याओं को आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है। इसके तहत उन्हें निःशुल्क चिकित्सा, शिक्षा, कौशल प्रशिक्षण एवं पुनर्वास की सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

उड़ान के लिए दिव्यांग अर्जुन

जम्मू–कश्मीर निवासी अर्जुन शर्मा (12) कक्षा 6 का छात्र है। वह बड़ा होकर डॉक्टर बनना चाहता है ताकि लोगों की सेवा कर सके। लेकिन जन्म से ही उसके दाहिने पैर में गंभीर विकलांगता उसके इस सपने को सच करने में बाधक थी। उसका दाहिना पैर घुटने के नीचे से हड्डी के बिना एक लोथड़े की तरह था, जिससे वह सामान्य रूप से चल–फिर नहीं पाता था।

स्कूल जाने के लिए भी अर्जुन को एक पांव से कूदते जाना पड़ता था। वह अपने दोस्तों की तरह भाग दौड़ और खेलकूद में भाग नहीं ले पाता था और हर दिन उदासी को समेट आंसू बहाता था। उसकी इस स्थिति को देखकर माता–पिता और परिजन दुखी रहते थे।

कुछ समय पहले अर्जुन के पिता को सोशल मीडिया के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क दिव्यांगता सुधारात्मक सर्जरी और कृत्रिम अंग मिलने की जानकारी मिली। वे अर्जुन को उदयपुर स्थित संस्थान लेकर आए। यहां विशेषज्ञों द्वारा अर्जुन के लिए विशेष नारायण लिंब तैयार कर पहनाया गया।

कृत्रिम पैर मिलने के बाद अर्जुन को लगा कि अब वह अपने पैरों पर खड़ा हो सकता है और पहले से कहीं अधिक सहजता से चल–फिर भी सकता है।

अर्जुन और उसका परिवार इस नई शुरुआत के लिए संस्थान का बारम्बार धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

खुशी से भरा अर्जुन कहता है – यह पैर मेरे लिए सिर्फ एक कृत्रिम अंग नहीं, बल्कि मेरी आजादी है। अब मैं आसमान छूने के लिए तैयार हूं। अर्जुन और उसका परिवार इस नई शुरुआत के लिए संस्थान का बारम्बार धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

कृत्रिम अंग से सक्रिय हुई रूकी ज़िन्दगियां

बेंगलुरु व आगरा में 1200 दिव्यांग लाभान्वित

संस्थान के तत्वावधान में पिछले दिनों बेंगलुरु और आगरा में नि:शुल्क नारायण लिंब एवं कैलीपर वितरण तथा माप शिविर सम्पन्न हुए। जिसमें 1200 से अधिक दिव्यांगजन लाभान्वित हुए।

बेंगलुरु :

वी.वी.पुरम्–बसवनगुड़ी स्थित महावीर धर्मशाला में 1 मार्च को नारायण लिंब एवं कैलीपर वितरण शिविर सम्पन्न हुआ। इसमें करीब 600 दिव्यांगजन आए। जिसमें 527 को कृत्रिम अंग व 53 को कैलीपर वितरित किए गए। अन्य जरूरतमंदों को 10 व्हीलचेयर, 20 वॉकर व 20 वैसाखी का वितरण किया गया।

शिविर के मुख्य अतिथि विश्व हिन्दू परिषद के प्रान्तीय अध्यक्ष श्री दीपक राजगोपाल जी रहे। अध्यक्षता जनरल मोटर्स के महाप्रबंधक श्री अमितजी पटेल ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री संदीप जी, जया रमेश जी, चन्दू जी, विनोद जी जैन, त्रिलोक राम जी, विकास जी बांदे, सुभा अधाया जी व श्री विमला जी जैन मंचासीन थी। संस्थान के निदेशक–ट्रस्टी श्री देवेन्द्र जी चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत – सत्कार एवं संचालन श्री महिम जैन ने किया।

आगरा :

फतेहाबाद रोड स्थित त्रिवेणी ग्रीन्स में 8 मार्च को हुए नारायण लिंब एवं कैलीपर माप शिविर में 570 से अधिक दिव्यांगजनों की विशेषज्ञ चिकित्सकों व ऑर्थोटिस्ट ने जाँच की। इनमें से 157 कृत्रिम हाथ–पैर व 214 कैलीपर बनाने का तकनीशियनों ने माप लिया। संस्थान के आगरा आश्रम प्रभारी राजमल शर्मा ने अतिथियों का स्वागत–सत्कार किया। मुख्य अतिथि समाजसेवी श्री गोपाल कृष्ण जी रहे। अध्यक्षता श्री नरेन्द्रपाल जी ढागरे ने की। अतिथियों ने 15 जरूरतमंद दिव्यांगजन को व्हीलचेयर वितरित की। पी एण्ड ओ विशेषज्ञ डॉ. मानस रजन साहू ने सर्जरी योग्य 123 दिव्यांगजन का चयन किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में सर्वश्री राम निवासजी अग्रवाल, आर.के. अरोड़ा, राजेन्द्र जी सिंघल, वीरेन्द्र जी दीक्षित व भगवान जी अग्रवाल उपस्थित रहे। शिविर प्रभारी हरिप्रसाद लड्ढ़ा व रमेश चन्द्र शर्मा थे। संचालन महिम जैन ने किया।

सेवा महातीर्थ में

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी का वार्षिक समारोह

संस्थान के सेवा महातीर्थ में संचालित नारायण चिल्ड्रन एकेडमी का 10वां वार्षिकोत्सव 'नन्हे सितारे' 21 मार्च को रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हर्षोल्लास से सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरस्वती वंदना एवं संस्थापक–चेयरमैन पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव', अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया तथा बड़गांव सरपंच श्री संजय जी शर्मा तथा ट्रस्टी श्री सुरेंद्र सिंह जी सलूजा द्वारा दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर बच्चों ने अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन करते हुए नृत्य–नाटिका 'मि. इंडिया', गुजराती नृत्य 'रमती आवजे', राजस्थान के लोक एवं भवई नृत्य, पंजाबी भंगड़ा तथा कठपुतली मंचन प्रस्तुत कर दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं। छात्रा दिव्यांशी देवड़ा एवं रवीना डांगी ने कुशल मंच संचालन किया।

आशीर्वचन देते हुए पूज्य गुरुदेव ने कहा कि आज के बच्चे ही कल के भारत का भविष्य हैं। अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों का प्रेमपूर्ण मार्ग निर्देशन करें, जिससे वे अपनी प्रतिभा का समुचित विकास कर सकें।

सेवक प्रशांत भैया ने अतिथियों का स्वागत करते हुए बताया कि एकेडमी में श्रमिक एवं कमजोर आय वर्ग के 800 से अधिक बच्चों को एलकेजी से आठवीं तक अंग्रेजी माध्यम में निःशुल्क शिक्षा प्रदान की जा रही है। प्रत्येक कक्षा में डिजिटल बोर्ड की सुविधा उपलब्ध है और यहां के विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर अपनी

चमके 'नन्हे सितारे'

प्रतिभा का लोहा मनवाया है। एकेडमी की प्राचार्य अर्चना गोवलकर ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिक्षा तभी सार्थक है, जब वह विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति और स्तर को समझते हुए उनके समग्र विकास में सहायक बने। नारायण चिल्ड्रन एकेडमी इसी दिशा में निरंतर कार्य कर रही है।

काजल: दर्द से जीत तक

उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के गांव सिकतरा की काजल (11) की जिंदगी दर्द, लाचारी और भय के बीच सिमटी थी। पिता राजकुमार चौधरी मजदूरी कर परिवार का पालन–पोषण करते हैं, जबकि माता मोनिता देवी गृहिणी हैं। दो भाई और चार बहिनों के बीच काजल का बचपन संघर्षों से घिरा रहा।

काजल का दायां पैर पंजे के ऊपर से जन्मजात विकृत था। यह विकृति उसके हर कदम को मुश्किल बना देती थी। चलना–फिरना चुनौती और खेलना–कूदना तो सपना ही था। आस–पड़ोस की लड़कियां जब खेलतीं –कूदती, तब वह अपनी लाचारी पर आंसू बहाती थी।

दिन–रात मेहनत कर गृहस्थी की गाड़ी को खींचते पिता बेटी की पीड़ा को देखकर अंदर ही अंदर टूट जाते थे। आर्थिक तंगी ऐसी थी कि किसी बड़े अस्पताल में इलाज कराना असंभव था। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। वे रोज काजल को स्कूल छोड़ते और वापस जाते थे, ताकि आगे की कठिन राहें थोड़ी आसान हो सकें। लेकिन दुर्भाग्य भी पीछे पड़ा था। गांव में पांचवीं तक ही स्कूल था। आगे की पढ़ाई के लिए 5 किलोमीटर दूर स्कूल था। आवागमन की व्यवस्थित सुविधा न होने से पांचवी के बाद पढ़ाई को मजबूरन विराम देना पड़ा।

कहते हैं, जब उम्मीद की सारी राहें बंद हो जाती हैं, तब कहीं न कहीं से नई रोशनी जरूर दिखाई देती है। एक दिन गांव के ही एक लड़के ने उसके परिवार को नारायण सेवा संस्थान में निःशुल्क उपचार की जानकारी दी। उस लड़के का भी दिव्यांगता सुधार का यहीं निःशुल्क ऑपरेशन हुआ था और वह अब पूरी तरह सामान्य जीवन जी रहा था।

परिजन काजल को 9 मई 2024 को पहली बार संस्थान लाए, जहां डॉ. अंकित चौहान ने इलाज शुरू किया। यह सफर आसान नहीं था। बारी–बारी से करीब चार ऑपरेशन, कई बार विजिंग और इलिजारोव पद्धति से लंबा उपचार चला। उसके धैर्य और साहस की परीक्षा थी, लेकिन काजल और माता–पिता ने हिम्मत नहीं हारी। 19 मार्च 2026 को अंतिम बार फॉलो–अप के लिए आने पर जांच के बाद काजल का कैलिपर के लिए माप लिया गया और 24 मार्च को वह अपने पैरों पर सीधी खड़ी हो गई।

बेटी को अपने पैरों पर खड़ा होते देख माता–पिता की आंखों से आंसू निकल पड़े। उन्होंने डॉक्टरों, संस्थान और दानदाताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि यहां उन्हें साक्षात ईश्वर मिल गए।

काजल के चेहरे पर खिली मुस्कान सिर्फ खुशी नहीं, बल्कि उसके संघर्ष की जीत की कहानी भी थी।

राधिका कापड़िया

प्राकृतिक चिकित्सा से मिली नई राहत

सूरत निवासी श्रीमती राधिका रोहित कुमार कापड़िया जब नारायण सेवा संस्थान के प्राकृतिक चिकित्सालय पहुँचीं, तब वे विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रही थीं। उन्हें लगातार कमर दर्द, पैरों में सूजन, डायबिटीज और ब्लड प्रेशर जैसी गंभीर परेशानियाँ थीं, जिससे उनका दैनन्दिन जीवन व स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा था।

राधिका बताती हैं कि संस्थान में उपचार शुरू होने के बाद मात्र 5 दिनों में ही उन्हें सकारात्मक बदलाव महसूस हुआ। चिकित्सालय में प्रतिदिन स्टीम बाथ, मालिश, विभिन्न थेरेपी, तथा सुबह–शाम पेट और आँखों पर विशेष लेप लगाए जाने से बहुत आराम मिला। एक्यूप्रेशर उपचार से शरीर के जोड़ों में दर्द भी काफी हद तक कम हुआ। डायबिटीज और ब्लड प्रेशर भी सामान्य स्तर पर आने लगे। राधिका जी पहले से कहीं अधिक स्वस्थ और ऊर्जावान महसूस कर रही हैं।

चिकित्सालय में मेरी देखभाल ठीक उसी तरह हुई जैसे परिवार में होती है।

संस्थान की नेचुरोपैथी टीम ने मुझे नई उम्मीद दी है।

निरंतर उपचार से मिला स्वास्थ्य और विश्वास

हिमाचल प्रदेश के शिमला निवासी लायक राम वशिष्ठ को दो वर्ष पूर्व यकायक हृदय संबंधी समस्या का सामना करना पड़ा। उन्होंने विविध अस्पतालों से उपचार भी लिया। लेकिन संतोषप्रद परिणाम नहीं आया। उन्होंने संस्थान के नारायण महावीर प्राकृतिक चिकित्सालय (नेचुरोपैथी) से सम्पर्क किया। इस पर उन्हें संस्थान आने की सलाह दी गई।

लायक राम बताते हैं कि उदयपुर में नियमित रूप से प्राकृतिक उपचार लेने के बाद हृदय संबंधी समस्या से उन्हें काफी राहत मिली है। दरअसल वे लंबे समय से पाचन संबंधी परेशानियों से भी जूझ रहे थे, जिससे उनका स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा था। प्राकृतिक चिकित्सा के माध्यम से उनकी पाचन क्रिया में भी सुधार हुआ और शरीर में हल्कापन तथा स्फूर्ति महसूस हुई। निरंतर देखभाल और उपचार से उनका आत्मविश्वास भी बढ़ा है।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़
भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/å नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001
बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर
अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर
जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012
अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर
बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
ब्व पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग
रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़
धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम
जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर
भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला – भोपाल
बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 08989609714, बखतगढ, त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला
परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343
नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़
पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375
मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708, 10–बीध्बी, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई
भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल

.....

श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल
जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद
पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल
फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा
करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001
अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001
नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली
हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद
हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,
कबाड़ी बाजार,
हापुड़
गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801

.....

श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा
बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर
बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद
जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
प्ट्ध1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई

मो. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवे सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4–बी, फ्लैट नंबर 608, बॉम्बे डाईंग महादा बोइवाड़ा, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे

मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी

मो. 08588835718
08588835719, बी–4/67, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली, पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली

07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली

मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

हरियाणा

गुरूग्राम

मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी. आर.पी.एफ. केम्प चौक, गुरुग्राम – 122001

हिसार

मो. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125005

पंजाब

लुधियाना

मो. 07023101153
311/312, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़

मो. 07073452176
मकान नंबर 3468 ग्राउंड फ्लोर, सेक्टर – 46–सी, चंडीगढ़–160047

बिहार

पटना

मो. 09257110805, मकान नं.–23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

उत्तर प्रदेश

मेरठ

मो. 09257110802
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ

मो. 09351230395
फ्लेट नम्बर 202, गुरूकृपा अपार्टमेंट न्यू श्रीनगर आलमबाग लखनऊ 226005 (उ.प्र.)

राजस्थान

जोधपुर

मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा

मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–वी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

अजमेर

नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती. कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मो. नं. 9216022978

गुजरात

सूरत

मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा

मो. 09529920081
मकान नंबर ए–2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू वीआईपी रोड, बड़ौदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद

मो. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी, विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरू

मो. 09341200200, नारायण सेवा संस्थान 40 (12) प्रथम फ्लोर, मॉडल हाउस कॉलोनी, अपोजिट समना पार्क, एनआर कॉलोनी, बसवानगुड़ी, बेंगलुरु–560004

वेस्ट बंगाल

कोलकाता

09529920097, मकान नंबर–580, स्वामी सारणी ग्वाला, बागान, कालांदी, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस

मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा

मो. 07023101163
मकान नं. 212ध्53, राधानगर, भारत पेट्रोलियम अधिकारी आवास बिल्डिग, मथुरा (उ.प्र.)

अलीगढ़

मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद

मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन निःशुल्क फिजियोथेरपी सेंटर, बी.–350 न्यू पंचवटी कॉलोनी, गाजियाबाद – 201009

लोनी

मो. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर, 72 शिव विहार, लोनी बन्थला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मन्दिर) के पास लोनी, गाजियाबाद

आगरा

मो. 07023101174
मकान नंबर ई–52, किडजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उत्तर प्रदेश) पिन कोड रू 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर

मो. 07869916950, 08306004806
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर रायपुर, (छ.ग.)

गुजरात

राजकोट

मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिर्वसिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून

मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी

मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा

मो. 07073474435, बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

मध्य प्रदेश

इन्दौर

मो. 09529920087
43, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर–452018

हरियाणा

अम्बाला

मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल

मो. 08696002432
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर

मो. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

तेलंगाना

हैदराबाद

मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,000 रू.	50,000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 100 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.
100 दिव्यांग एवं निर्धन बच्चों की भोजन सेवा	3,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि			
1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI
Google Pay PhonePe Paytm
narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

नारायण महावीर
प्राकृतिक चिकित्सालय

प्राकृतिक चिकित्सा से स्वस्थ जीवन

प्रकृति का स्पर्श
स्वास्थ्य का
वादा

बीमारियों नहीं, जड़ से उपचार

आयुर्वेदिक उपचार

प्राकृतिक थेरेपी

सात्विक आहार

- 100% प्राकृतिक उपचार
- बिना दवा बिना दुष्प्रभाव
- शरीर, मन और आत्मा का संतुलन
- रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि
- स्वस्थ जीवन दीर्घायु

एक बार सेवा का मौका अवश्य दें

+91 7023509999

दिव्यांगों की तकदीर बदलने में हमारी मदद करें

कृत्रिम अंग सहयोग

10,000/-

Donate via UPI

Google Pay PhonePe Paytm

narayanseva@sbi

Seva Soubhagya Print Date 1 April, 2026 Registered Newspaper No. RAJBIL/2010/52404, Published by Sole-Owner, Publisher and Chief Editor Prashant Agarwal from Sevadham, Hiran Magri, Sector-4, Udaipur -313002 (Raj) Printed at Newtrack Offset Private Limited, Udaipur. Total pages-28 (No. of copies printed 1,50,000) cost-Rs.5/-